

Climatic Requirement

Udan fodder maize performs well in warm & moderately humid climates. In Summer (February-April) the crop grows well under dry and warm conditions with assured irrigation. During the Kharif season (June-July) the crop benefits from warm monsoon conditions and good rainfall distribution, but waterlogging must be avoided.

Sowing Time: (Kharif) June-July onset of monsoon (Summer) February-April

Crop Duration: 85-90 days after sowing

Seed Rate: 20-25kg per acre

Land Preparation:

Plough the field once deeply followed by 2-3 harrowings to make a fine tilth. Level the field properly for uniform irrigation and drainage. Apply 4-5 tons FYM or compost per acre during land preparation.

Fertilizer Dose (per acre):

UREA	SSP	MOP
55 kg (25kg N)	125 kg (20 kg P ₂ O ₅)	30 kg (18 kg K ₂ O)
Top Dressing: 55 kg Urea (25 kg N) after 25-30 DAS (knee-high stage)		

Irrigation Schedule:

- First irrigation at sowing.
- Subsequent irrigations every 7-10 days depending on soil and climate.
- Ensure adequate moisture during germination, knee-high, and cob initiation stages.
- Avoid waterlogging.

Weed Control:

- Pre-emergence: Atrazine 1.0 kg/acre in 200 liters of water within 2 days after sowing.
- Post-emergence: One interculture or hoeing at 25-30 DAS.

Pest & Disease Management:

Pests:

- Stem borer / Armyworm: Spray Chlorantraniliprole 0.4 ml/l or Emamectin benzoate 0.4 g/l

Diseases:

- Leaf blight / Rust: Spray Mancozeb 0.2% or Propiconazole 0.1%

Maturity Indicators:

- Ready for harvest when 50-60% flowering when leaves are green and stems are succulent for best nutrition and digestibility.

जलवायु आवश्यकता:

उड़न चारा मक्का गर्म और मध्यम आर्द्र जलवायु में अच्छा प्रदर्शन करता है। गर्मियों (फरवरी-अप्रैल) में, फसल सुनिश्चित सिंचाई के साथ शुष्क और गर्म परिस्थितियों में अच्छी तरह से बढ़ती है। खरीफ के मौसम (जून-जुलाई) के दौरान, फसल को गर्म मानसून की स्थिति और अच्छी वर्षा वितरण से लाभ होता है, लेकिन जलभराव से बचना चाहिए।

बुवाई का समय: (खरीफ) जून-जुलाई, (ग्रीष्म) फरवरी-अप्रैल

फसल की अवधि: बुवाई से 85-90 दिन

बीज दर: 20-25 किग्रा. प्रति एकड़

भूमि की तैयारी:

एक बार खेत को गहराई से जुताई करें और उसके बाद 2-3 हैरोइंग करके एक महीन टिल्थ बनाएं। एक समान सिंचाई और जल निकासी के लिए खेत को ठीक से समतल करें। भूमि तैयार करने के दौरान प्रति एकड़ 4-5 टन FYM डालें।

उर्वरक खुराक (प्रति एकड़):

यूरिया	एसएसपी	एमओपी
55 किग्रा. (25 किग्रा. N)	125 किग्रा. (20 किग्रा. P ₂ O ₅)	30 किग्रा. (18 किग्रा. K ₂ O)
टॉप ड्रेसिंग: 55 किग्रा यूरिया (25 किग्रा N) 25-30 दिन (घुटने-उच्च चरण) के बाद		

सिंचाई अनुसूची:

- बुवाई के समय पहली सिंचाई।
- बाद में मिट्टी और जलवायु के आधार पर हर 7-10 दिनों में सिंचाई।
- अंकुरण, घुटने तक ऊंचे और कोब दीक्षा चरणों के दौरान पर्याप्त नमी सुनिश्चित करें।
- जलभराव से बचें।

खरपतवार नियंत्रण:

- पूर्व-उद्भव: बुवाई के बाद 2 दिनों के भीतर 200 लीटर पानी में एट्राज़िन 1.0 किग्रा/एकड़।
- उद्भव के बाद: 25-30 DAS पर एक इंटरकल्चर या गुड़ाई।

कीट एवं रोग प्रबंधन:

कीट:

- सस्टेम बोरर: क्लोरान्त्रानिलिप्रोल 0.4 मिली/लीटर
 - आर्मीवर्म: इमामेक्टिन बेन्जोएट 0.4 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें
- ### रोग:
- लीफ ब्लाइट/जंग: स्प्रे मैकोजेब 0.2% या प्रोपिकोनाज़ोल 0.1%

परिपक्वता संकेतक:

- कटाई के लिए तैयार: जब 50-60% फूल आते हैं जब पत्तियां हरी होती हैं और तने सर्वोत्तम पोषण और पाचनशक्ति के लिए रसिले होते हैं।

The recommended package of practice is based on trials done at company's research stations. As a result of varied soil type, water, weather conditions and crop rotations, the yield of this variety may vary. As method of seed sowing and usage is not in our control, hence, only seed quality can be ensured. Consult the nearest SAU/ICAR Research Stations or your local State Agriculture Officer for guidance in growing good crop.

अभ्यास का अनुशंसित पैकेज कंपनी के अनुसंधान स्टेशनों पर किए गए परीक्षणों पर आधारित है। विभिन्न प्रकार की मिट्टी के प्रकार, पानी, मौसम की स्थिति और फसल चक्र के परिणामस्वरूप, इस किस्म की उपज भिन्न हो सकती है। चूंकि बीज बोने की विधि और उपयोग हमारे नियंत्रण में नहीं है, इसलिए केवल बीज की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सकती है। अच्छी फसल उगाने में मार्गदर्शन के लिए निकटतम एसएयू/आईसीएआर अनुसंधान स्टेशनों या अपने स्थानीय राज्य कृषि अधिकारी से परामर्श करें।

